धान एकांकी (v) अर्थपूर्ण एकांकी (vi) राजनीतिक एकांकी।

नाटक और एकांकी में अन्तर

काव्य भेदों में नाटक जितना रमणीय है, उतना ही प्राचीन और महत्वपूर्ण भी है। यूनान और भारत दोनों ही प्राचीन सभ्यता के देशों में दृश्यकाव्य का विकास बहुत प्राचीन काल में ही हो गया था। अभिनयशील तथा दृश्यकाव्य को संस्कृत में रूपक और पाश्चात्य साहित्य में 'ड्रामा' कहा जाता है। हिन्दी में इसे 'नाटक' कहा गया है—नाटक 'नट' शब्द से निर्मित है, जिसका आशय है 'सात्विक भावों का अभिनय।' जिस प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में कहानी का उदय हुआ, ठीक उसी प्रकार नाटक के अन्तर्गत एकांकी नाटक विधा का उदय हुआ है। आज के व्यक्ति का जीवन व्यस्त, जटिल और विषम परिस्थितियों में फँसे होने के कारण विशालकाव्य, महाकाव्य, नाटक

Scanned with CamScanner

तथा बृहदकाय उपन्यास पढ़ने के लिए समय नहीं मिल पाता। अत: उसे एक छोटी-सी रचना चाहिए जो उसका मनोरंजन कर सके। इस दृष्टि से आज के युग में एकांकी की लोकप्रियता काफी बढ़ गई है।

एकांकी और नाटक दोनों साहित्य की विधाएँ हैं। दोनों का सम्बन्ध रंगमंच और अभिनय से है। परन्तु इन दोनों विधाओं में कुछ अन्तर स्पष्ट है जो निम्नलिखित हैं—

- नाटक में तीन से पाँच अंक होते हैं तथा अंकों के अन्तर्गत दृश्यों का विभाजन होता है। एकांकी के एक ही अंक होता है। इसमें दृश्यों का विभाजन नहीं होता।
- नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है। एकांकी में पात्र सीमित होते हैं।
- नाटक में कथा का फैलाव अधिक होता है। एकांकी की कथा संक्षिप्त होती है।
- नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में तीन से पाँच घण्टे का समय लगता है। एकांकी के 30 मिनट से 45 मिनट के अन्तर समाप्त किया जाता है।
- नाटक में संकलनत्रय का होना जरूरी नहीं है। एकांकी में संकलनत्रय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- नाटक में लम्बे-लम्बे संवाद हो सकते हैं। एकांकी में संवाद संक्षिप्त मार्मिक एवं ध्वन्यात्मक होता है।
- नाटक में अंक और दृश्य अधिक होने के कारण रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए अधिक उपकरणों एवं पर्दे की आवश्यकता पड़ती है। एकांकी में एक अंक होने के कारण घटाक्षेप की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- दर्शकों को नाटक देखने के लिए धैर्य एवं अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है। एकांकी में दर्शक कम समय में ही आनन्द प्राप्त कर लेता है।
- नाटक के पात्र वृषभ की भाँति रंगमंच पर आते हैं और अधिक समय तक दर्शकों के समक्ष रहते हैं। एकांकी के पात्र किरण की भाँति रंगमंच पर आते हैं और अपना उद्देश्य पूर करके आँखों से ओझल हो जाते हैं।
- नाटक के कथानक में अधिकारिक और प्रासंगिक दोनों कथा होते हैं। एकांकी में प्रासंगिक कथाओं का स्थान नहीं होता।
- डॉ. रामचरण महेन्द्र के अनुसार एकांकी न तो बड़े नाटक का संक्षिप्त रूप है, न कहानी, संभापण। अत: नाटक प्रबन्ध काव्य या महाकाव्य के समान विस्तृत है, तो एकांकी मुक्तक के समान है।
- एकांकी आरम्भ होते ही चरम परिणति की ओर द्रुत गति से भागना प्रारम्भ करती है। जबकि नाटक में गति विकास धीमा हो सकता है।
- एकांकी में क्षिप्रता और संक्षिप्तता आवश्यक है जो नाटक में नहीं।
- नाटक में मुख्य रूप से कथानक को विस्तारित रूप से दर्शाया जाता है जबकि एकांकी के कथानक में ही घनत्व रहता है।
- एक नाटक में चरित्र के विकास की गतिविधियों को दर्शाया जाता है जबकि एकांकी में पात्र के क्रियाकलापों एवं चरित्रों का संयोजन किया जाता है।
- नाटक में कई किरदारों एवं पात्रों की मौजूदगी होती है जबकि एकांकी में पात्रों की संख्या कम से कम होती है।
- नाटक पृष्ठभूमि एवं कथानक का एक विस्तृत रूप होता है, परन्तु एकांकी में पृष्ठभूमि एवं कथानक का विस्तार नहीं किया जाता।
- नाटक में मुख्य रूप से छोटी से छोटी घटनाओं का भी विवरण किया जाता है, परन्तु एकांकी में छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन नहीं किया जाता है।
- नाटक में कहानी के विचारों को विस्तारित किया जाता है जबकि एकांकी में विचार को केवल संकेत मात्र रखा जाता है।
- एक नाटक में किरदारों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाता है, परन्तु एकांकी में उस किरदार के केवल एक पक्ष को ही लिया जाता है।
- नाटक में स्थान एवं समय की सीमा का विस्तार किया जाता है, जबकि एकांकी में घटना, स्थान एवं समय का वर्णन नहीं किया जाता।

Scanned with CamScanner